## नानकिंग की संधि
### 29.Aug., 1842

(1.)

Ashish kumar Thakur
B.A. II, History (H), Paper-IV
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur.

29 Aug, 1842 को नानकिंग की संधि पर हस्ताक्षर हुए और प्रथम आंग्ल-चीन या प्रथम अफीम युद्ध का अंत हुआ। इस संधि की निम्नलिखित शर्तें थी।

(i) कैण्टन, अमोय, फूचाऊ, निंगपो और संघाई - ये पाँच बंदरगाह ब्रिटिश व्यापारियों के निवास और व्यापार के लिए खोल दिए गए और इनमें उन्हें अपने अफसर नियुक्त करने का अधिकार दे दिया गया।

(ii) हांगकांग का द्वीप हमेशा के लिए ब्रिटेन को दे दिया गया।

(iii) चीन ने आयात और निर्यात पर तटकर की एक समान और उदार दर स्वीकार कर ली। इस संधि के अनुसार पाँच प्रतिशत तटकर निश्चित किया गया और यह व्यवस्था की गई कि पारस्परिक समझौता के बिना तटकर की दरें बढ़ाई नहीं जाएगी।

[iv] को-हांग को भंग कर दिया गया और ब्रिटिश व्यापारियों को अपने इच्छानुसार व्यक्तियों से व्यापारिक लेन-देन करने का अधिकार दे दिया।

[v] यह व्यवस्था की गई कि मुख्य ब्रिटिश प्रतिनिधि और चीन अधिकारियों के बीच पत्र व्यवहार को 'प्रार्थना' न कहकर 'संदेश' या 'पत्र' कहा गया।

[vi]. यह माना गया कि अंग्रेज पर मुकदमा उन्हीं के कानून के अनुसार और उन्हीं के अदालत में चलेंगे।

[vii] चीन ने नष्ट अफीम के हर्जाने के रूप में 60 लाख डॉलर, हांगकांग के व्यापारियों पर ब्रिटिश नागरिकों के कर्ज के रूप में तीस लाख डॉलर और लड़ाई के लिए हुए खर्च के बदले एक करोड़ 20 लाख डॉलर, कुल मिलाकर 2 करोड़ 10 लाख डॉलर क्षतिपूर्ति के रूप में देना स्वीकार किया

[viii] यह भी निश्चित हुआ कि अन्य देशों के लोगों को जो भी सुविधाएँ देगा वे अंग्रेजों को अपने आप प्राप्त होगी

[ix] कौतो प्रथा समाप्त कर दी जाए।

[x] चीन एवं ब्रिटेन के राजकर्मचारियों ने परस्पर समानता के आधार पर रहना स्वीकार किया।

Ashish

Scanned with CamScanner

## नानकिंग संधि का प्रभाव :-

प्रथम अफीम युद्ध एवं नानकिंग संधि के प्रभाव दूरगामी सिद्ध हुए। प्रमुख प्रभाव निम्न थे।

1. युद्ध का प्रमुख कारण अफीम व्यापार का प्रश्न था, मगर अफीम व्यापार के नियंत्रण के संबंध में कोई समझौता नही हुआ और अफीम का व्यापार निर्बाध रूप से जारी रहा।

2. ब्रिटिश सेना द्वारा पराजय से मंचू सरकार की प्रतिष्ठा गिरी।

3. ब्रिटिश ने बलपूर्वक चीन का द्वार खोलने में आंशिक सफलता प्राप्त की। केटलबी ने लिखा है कि "ब्रिटिश बंदूकों ने चीन में एक एक ऐसा छेद बना दिया था, जिसके द्वारा न केवल व्यापार में वृद्धि हुई अपितु अन्य यूरोपीय शक्तियों ने भी चीन में प्रवेश किया।

4. ब्रिटेन की देखा देखी चीन के साथ अमेरिका ने 1844 ई० में ही ह्वाम-हॉगिया संधि की। फ्रांस ने भी 1844 ई० में ही ह्वाम-पौआ की संधि सम्पन्न की। 1847 ई० में चीन को 1845 ई० में बेल्जियम के साथ एवं 1847 ई० में चीन को नार्वे व स्वीडन के साथ संधि कर इन्हें व्यापारिक व अन्य सुविधाएँ देनी पड़ी।

इस प्रकार चीन का विशाल साम्राज्य पाश्चात्य यूरोपीय देशों के शोषण के लिए खुल गया। क्लियट एवं हाउसन के अनुसार, "चीन एक अंतर्राष्ट्रीय उपनिवेश बन गया।"

5. नानकिंग की संधि से उत्पन्न असंतोष के कारण चीन में मंचू राजवंश के विरुद्ध कई विद्रोह हुए। इसमें ताइपिंग विद्रोह (1851-1864) सबसे प्रबल विद्रोह था। जिसे मंचू सम्राट को विदेशियों की मदद से दबाना पड़ा।

Ashish